वेणीसंहार में काव्य–सौन्दर्य

डॉ0 हरीशदास

श्रीभट्टनारायण कृत 'वेणीसंहार' नाट्यशास्त्रीय नियमों का सफल अनुसरण करने वाला एक उत्कृष्ट नाटक है। अर्थ प्रकृतियों, अवस्थाओं और सन्धियों का इसमें सुन्दर समावेश है। संवाद रोचक हैं तथा प्रकृति वर्णन के सुन्दर प्रसंग से यह पुष्ट है। वीर रस मुख्य होने से इसमें ओज गुण और गौडी शैली का प्राधान्य है। श्रृंगार, करुण, संवाद और उपदेशात्मक नीति श्लोकों के अनेक प्रसंगों में वैदर्भी और पांचाली का प्रयोग प्राप्त होता है। भाषा सबल, प्रौढ़ परिष्कृत और प्रांजल है। भावों की उदात्तता है। प्रायः सभी मुख्य रस प्राप्य हैं। अलंकार–विधान एवं छन्दोयोजना की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट नाट्यरचना है। काव्य–सौन्दर्य के विभिन्न पक्षों के उल्लेख से नाटक में कवित्व–प्रतिमा का सहज ही दर्शन हो जाता है।